प्रश्नः

''मनुष्य परमेश्वर के नमूने से कब और कैसे दूर हुआ?''

उज़रः

प्रथम मनुष्य (आदम) को सज़्पूर्ण बनाया गया था लेकिन वह विश्वास से गिर गया अर्थात पापी बन गया (उत्पज़ि 3; रोमियों 5:12)। इसी तरह, हमारे प्रभु की कलीसिया बेशक आत्मा की प्रेरणा प्राप्त और गलती न करने वाले प्रेरितों की अगुआई में आरज़्भ हुई थी (यूहन्ना 16:33), जिसके बारे में पवित्र आत्मा जानता था कि वह भी विश्वास से गिर जाएगी (प्रेरितों 20:29, 30; 1 तीमुथियुस 4:1, 3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10)। उस महान कलीसिया ने पहले तो बड़ी जल्दी से बढ़ना था (दानिय्येल 2:35, 44; मज़ी 13:31-33), परन्तु बाद में इसने अपनी सज़्पन्नता से गिरकर विश्वास से गिर जाना था।[1]

यद्यपि कलीसिया नैतिकताओं में, आराधना में और बहुत से दूसरे ढंगों से गिर गई, परन्तु हम विश्वास से उस गिरने पर कलीसिया के प्रबन्ध के बाइबल के नमूने के अनुसार ध्यान देंगे।

सिद्धता का युग, अर्थात जब पवित्र आत्मा परमेश्वर की कलीसिया के लिए उचित प्रबन्ध करने की शिक्षा देने के लिए प्रेरितों की अगुआई करता था, उस समय हर स्थानीय मण्डली में ऐल्डर होते थे जिनकी सहायता के लिए डीकन उनके अधीन काम करते थे। पवित्र शास्त्र में इन ऐल्डरों को ''Bishops'' (KJV) और ''अध्यक्ष'' (प्रेरितों 20:17, 18; तीतुस 1:5-7) भी कहा जाता था। परमेश्वर के प्रबन्ध के अधीन, ऐल्डरों में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता था; किसी ऐल्डर को दूसरों से ऊपर नहीं ठहराया जाता था। नये नियम के लिखे जाने के समय कलीसिया में अगुआई करने वाले ऐसे ही काम करते थे, लेकिन ऐसा प्रबन्ध में विश्वास के गिरने के पहले चरण से पहले तक ही था। ईस्वी सन 100 में, इगनेशियस ने राजतन्त्रीय बिशप होने के बारे में लिखा था। कलीसिया में यह अजनबी

अधिकारी कौन है ? एक ऐल्डर को ''बिशप'' बनाकर उसे दूसरों से ऊंचा मान लिया गया, जबकि दूसरों को केवल ''ऐल्डर'' ही माना गया। बिशप को दूसरों से अधिक अधिकार दिया गया और उसे ''राजसी बिशप'' कहा जाने लगा। कुछ ही वर्षों में, परमेश्वर की मण्डलियों की अगुआई का काम ऐल्डरों की बहुसंज़्या वाले प्रबन्ध से ''पास्टर सिस्टम'' में बदल गया, जिसमें एक आदमी का शासन हो गया जो पोप की तरह काम करता था। कलीसिया के प्रबन्ध में ऐसा सिस्टम परमेश्वर के सिस्टम से मनुष्य का दूर होना है। ''राजसी बिशप के पद के होने को प्रैसबिटरों की बहुसंज़्या या बिशपों की बहुसंज़्या के इस्तेमाल से नहीं मिलाया जा सकता।''[2]

आधुनिक कैथोलिक चर्च भी प्रारज़्भ में नये नियम के इस लिखित रिकॉर्ड से दूर होने की बात को स्वीकार करती है। रोमन कैथोलिक के इतिहासकार जॉर्ज स्टेबिंग ने *द स्टोरी ऑफ़ द कैथोलिक चर्च* में कहा है:

> सबसे पहले संत इग्नेशियस के लेखों में ही हमें बिशपों, प्रीस्टों [ऐल्डरों] और डीकनों के होने की बात का पता चलता है। ... कोई संदेह नहीं कि हम उनके ठहराए जाने को अपने प्रभु की ओर से मान सकते हैं, परन्तु हमें अपना विश्वास कलीसिया की परज़्परा पर रखना चाहिए। न कि नये नियम की बातों पर, ज़्योंकि इनमें हमें वे नहीं मिलेंगे।

ऐसी पृष्ठभूमि होने पर, कलीसिया के प्रबन्ध में बिगाड़ के अगले कदम पर हैरानी नहीं होनी चाहिए। राजसी बिशप ने एक कलीसिया से संतुष्ट नहीं होना था। शीघ्र ही कई कलीसियाएं उस एक राजसी बिशप के अधीन हो गईं। फिर, ''तीसरी सदी में, ... एक मैट्रो पोलिटन अर्थात क्षेत्रीय राजधानी के बिशप की अगुआई में कई बिशपों का एक संगठन बन गया।''[3] उसके बाद, ''प्रथम श्रेणी के मैट्रोपोलिटन'' (अलेग्ज़ेन्ड्रिया या सिकन्दरिया, अन्ताकिया, यरूशलेम, रोम और कौन्सटैंटीनोप्ल) को ''पेट्रियार्ज़्स'' (अर्थात धर्माध्यक्ष कहा जाने लगा)।[4] ये धर्माध्यक्ष मसीही जगत के अपने क्षेत्रों पर अधिकारी तो थे, परन्तु एक दूसरे के ऊपर कोई नहीं था। वास्तव में चौथी शताज़्दी में, रोमी सरकार के सम्राट कौन्सटैंटाइन ने इन मैट्रोपोलिटन बिशपों के विश्वव्यापी अधिकारी होने के बजाय, ''अपने आप को'' सारी कलीसिया पर ''सर्वोच्च अधिकार दे दिया।'' उसी ने ही 325 ईस्वी में नाईस (या नीकिया) नामक स्थान पर 318 बिशपों की पहली सार्वभौमिक सभा बुलाई थी। परन्तु सज़ा की भूख केवल सम्राटों में ही नहीं, उपदेशकों में भी आ जाती है। 595 ईस्वी में, कौन्सटैंटीनोप्ल के पेट्रियार्क, जॉन द फास्टर, में सब बिशपों और धर्माध्यक्षों के ऊपर विश्वव्यापी बिशप के रूप में होना चाहा। रोमी बिशप, ग्रेगरी इससे बहुत नाराज हुआ और उसने सम्राट को लिखा, ''मैं, सचमुच, पूर्ण विश्वास से दावा करता हूं कि जो भी अपने आप को *विश्वव्यापी प्रीस्ट* बनाता या कहलाना चाहता है, वह व्यज़्ति अपने व्यर्थ घमण्ड के कारण मसीह विरोधी का अग्रदूत है, ज़्योंकि अपने घमण्ड से, वह अपने आप को दूसरों से

ऊंचा करता है।''[6]

ग्रेगरी को इस बात का ज्ञान नहीं था कि वह आने वाले पोप, बल्कि अपने ही उज़राधिकारी बोनिफेस तृतीय के विरुद्ध बात कर रहा था। कौन्सटैंटीनोप्ल का धर्माध्यक्ष ग्रेगरी के विरोधों के बावजूद रोमी बिशप के मरने के समय विश्वव्यापी बिशप का पद लिए हुए था। रोम का नया बिशप बनने पर बोनिफेस तृतीय ने कोन्सटैंटीनोप्ल के दावे से भी बढ़कर किया। हत्यारे/सम्राट फोकास से मित्रता हो जाने के बाद, उसने सम्राट से कौन्सटैंटीनोप्ल के कार्यक्षेत्र से उस पद को हटाकर रोम में ठहराने के लिए कहा। जॉन मोशेन ने यह कहते हुए कि ''बहुत से विद्वान लेखकों, और ज्ञानी लोगों'' ने इसे मान लिया, बेरोनियस के अधिकार के बारे में बताया।[7] कौन्सटैंटीनोप्ल का विरोध करने वाले बिशपों ने इस बात की पुष्टि की कि उनका कार्य क्षेत्र ''रोम की प्रतिष्ठा और अधिकार के बराबर'' ही नहीं बल्कि ''सभी मसीही कलीसियाओं'' से उज़म भी था। फोकास ने उनके विरोधों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि रोमी बिशप को और ऊंचा पद दे दिया, ''और इस तरह पोप के अधिकार का पहली बार इस्तेमाल हुआ।''[8]

आज भी रोम की इच्छा समर्पित मसीही नहीं, बल्कि अपनी बड़ाई चाहने वाला ''घृणित निर्दयी'' फोकास बनाता है, जिसने सम्राट मौरिशियस का लहू बहाकर शाही सिंहासन पर कज़्ज़ा कर लिया।[9]

कागज़ की कमी के कारण परमेश्वर के वचन से दूर जाने वालों की चर्चा नहीं की जा सकती जो आज भी जारी है। इतना ही कहना काफी है कि विश्वास से गिरना बिल्कुल उसी के अनुसार हुआ जिसकी परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखकों ने भविष्यवाणी की थी।

पाद टिप्पणियां

[1] *ए कैटेकिज़्म ऑफ़ क्रिश्चियन डॉक्ट्रिन* में ''त्रुटिहीनता'' या indefectibility का कैथोलिक विश्वास इस प्रकार परिभाषित किया गया है: ''... कलीसिया, जिसकी नेंव मसीह ने रखी, युग के अन्त तक बनी रहेगी।'' रोमन कैथोलिकों की ही परिभाषा से, यह साबित होता है कि कैथोलिक कलीसिया बाइबल की कलीसिया नहीं है; ज़्योंकि पौलुस के अनुसार तो बाइबल की कलीसिया में कमी होनी थी। यदि कोई कलीसिया यह दावा करती है कि ''इसने कभी'' प्रेरितों की शिक्षा ''देना, या सिखाना बन्द नहीं किया, और न कभी करेगी'' तो इससे पता चलता है कि यह बाइबल की कलीसिया नहीं है, ज़्योंकि सच्ची कलीसिया में से बहुत से लोगों ने ''विश्वास से फिर'' जाना था, जिसे ''विश्वास से गिरना'' कहा जा सकता है। [2] सैमुएल मैकाउले जैज़्सन, सं., *द न्यू शैफ-हज़ौग इन्साइज़्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजियस नॉलेज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1991), 8:263 में अडौल्फ हरनैक, ''ऑर्गेनाइजेशन ऑफ़ द अरली चर्च।'' [3] *शैफ-हज़ौग इन्साइज़्लोपीडिया,* 1:259 में पॉल हिन्सकियुस, ''आर्कबिशप।'' [4] *शैफ-हज़ौग इन्साइज़्लोपीडिया,* 3:255 में फिलिप्प मेयर, ''कौन्सटैंटीनोप्ल।'' [5] जॉन लॉरेंस मोशेम, *ऐन एज़्लेसिएस्टिकल हिस्टरी, एनसियंट एण्ड मॉडर्न, अनु. आरकीबाल्ड मैज़्लेन, अंक 1* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1871),106. [6] जॉन एफ़. रोअ, *ए हिस्टरी ऑफ़ रिफरमेटरी मूवमेंट्स,* 9वां संस्क., संशो. (सिंसिनट्टी, ओहा: एफ़. एल. रोअ, 1913), 304. [7] मोशेम, 178. [8] वहीं। [9] वहीं।